अमर उजाला | लखनऊ | बृहस्पतिवार | 25 जुलाई 2013

विदेशी हमसे सीख रहे गन्ने की मिठास बढ़ाना

आईआईएसआर की विकसित तकनीकों के प्रति बढ़ा कई देशों का रुझान, दूसरे देशों के मुकाबले यहां होता है तीन गुना उत्पादन

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) और प्रदेश के किसान अब विदेशों को गन्ने की मिठास बढ़ाने का फार्मूला सिखा रहे हैं। संस्थान के वैज्ञानिकों ने कुछ प्रगतिशील किसानों के साथ मिलकर गन्ने की खेती में जो नए प्रयोग किए हैं, उससे प्रभावित होकर कई विदेशी संस्थान यहां का रुख कर रहे हैं। पिछले दो वर्षों में विभिन्न देशों के राजनेता, वैज्ञानिक और चीनी कारोबारी यहां से तकनीक सीखकर अपने देश में गन्ने की मिठास बढ़ाने में जुटे हैं।

लखनऊ के रायबरेली रोड स्थित आईआईएसआर में आ रहे अधिकतर विदेशी वैज्ञानिकों का लक्ष्य यहां जारी शोध और तकनीकों को अपने देश के किसानों के लिए उपलब्ध कराना है। इसके लिए वे संस्थान के वैज्ञानिकों से वार्ता कर साझेदारी के नये क्षेत्र तलाश कर रहे हैं। वहीं कारोबारियों का लक्ष्य तकनीकों को अपने देश के लिए अपनाना और वहां लोकप्रिय करना है। इसे संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन एक स्वागत योग्य ट्रेंड मानते हैं। उनका कहना है कि इससे आईआईएसआर के वैज्ञानिकों को अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने का मौका मिल रहा है। जो उनमें अपने काम के प्रति आत्मविश्वास पैदा कर रहा है। इससे संस्थान के साथ देश का भी नाम हो रहा है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह के अनुसार आईआईएसआर द्वारा विकसित गन्ने की प्रजातियों में उत्पादन दक्षिण एशिया के अन्य देशों में उगाई जा रही प्रजातियों के मुकाबले दो से तीन गुना ज्यादा है। ऐसे में यह हमारी तकनीकों की मार्केटिंग का सबसे व्यवहारिक तरीका है। दूसरी ओर पेड-ट्रेनिंग, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और विजिट्स के जरिए राजस्व बढ़ाने में भी मदद मिल रही है। यह भी संस्थान के लिए फायदेमंद ही है।

कई देशों के वैज्ञानिक और चीनी उद्योगपतियों का दल कर चुका है दौरा

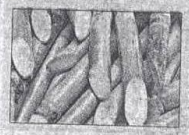

आईआईएसआर की इन तकनीकों से ललचाए विदेशी

- बोआई, पेड़ी प्रबंधन और गन्ना कटाई के लिए आईआईएसआर द्वारा बनाया गया यंत्र
- स्वस्थ बीज उत्पादन की तकनीक
- प्रयोगशाला से किसानों को तकनीक ट्रांसफर के लिए उपयोग हो रहा मॉडल
- मानव संसाधन विकास व उसका वैज्ञानिक ढंग से उपयोग

आईआईएसआर को फायदा

इंस्टीट्यूट को इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल रही है। संस्थान की ओर से किए गए शोध, विकसित तकनीक और तैयार की गई प्रजातियों को दूसरे देशों जाने पर अपनी परफॉर्मेंस को आंकने का भी मौका वैज्ञानिकों को मिल रहा है। इससे वे अपने शोध को और परिष्कृत करने व आगे ले जाने पर काम कर पा रहे हैं। श्रीलंका और बांग्लादेश से एमओयू की प्रक्रिया चल रही है तो कई अन्य देशों से साझेदारी पर वार्ता जारी है।

प्रदेश के किसानों को फायदा

प्रदेश के कुछ हिस्सों में किसानों और चीनी मिलों के साथ आईआईएसआर अपने प्रयोगों को धरातल पर आजमा रहा है। इससे इन किसानों को अंतरराष्ट्रीय संपर्क स्थापित करने, बेहतर एक्सपोजर पाकर अपनी फसलों को उन्नत करने का मौका मिल रहा है।